

29 नुक्कड़ थियेटर – शिक्षित करने वाली एक कला

उत्तरा भरत कुमार
के साथ लर्निंग कर्व की बातचीत

इस अंक की तैयारी करते समय हमें लगा कि शिक्षित करने वाले कला के सभी रूपों पर विचार करना चाहिए। नुक्कड़ थियेटर में एक ऐसी तात्कालिकता और आकर्षण है जो सार्वभौमिक और पूरी तरह से सहभागितापूर्ण है। इससे प्राप्त सन्देश व्यक्ति के व्यवहार को बदलने के लिए पर्याप्त प्रभावशाली है।

नुक्कड़ थियेटर समझ बढ़ाने और परिवर्तन को मजबूत करने वाले एक माध्यम के रूप में जाना जाता है। इस बात को विस्तार से समझने के लिए प्रेमा रघुनाथ ने *नलमदना* की संस्थापिका ट्रस्टी उत्तरा भरत कुमार से बातचीत की। *नलमदना*, नुक्कड़ थियेटर का उपयोग कैसे करता है और स्कूलों में इसका प्रयोग कैसे किया जा सकता है आदि के बारे में खुलकर चर्चा हुई। यहाँ साक्षात्कार के कुछ अंश प्रस्तुत हैं। पर वास्तविक बातचीत पर जाने से पहले यहाँ एक संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है जिसे *नलमदना* के लेखों से लिया गया है।

जब उत्तरा भरत कुमार वेलेस्ले कॉलेज से स्नातक होकर लौटीं, तो उन्होंने कुछ स्थानीय उत्साही लोगों एवं एक स्थानीय विश्वविद्यालय के तीन आदर्शवादी युवा स्नातकों के साथ मिलकर 1993 में *नलमदना* की कल्पना और स्थापना की। उनके उत्साह और ईकोइंग ग्रीन फाउण्डेशन (www.echoingreen.org) से अनुदान पाकर इस संगठन ने अपनी जड़ें जमा लीं।

नलमदना की नीति है कि मनोरंजन–शिक्षा के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य प्रदान किया जाए। उनका मानना है कि लोगों को सिर्फ ज्ञान की नहीं बल्कि उससे कुछ ज्यादा की जरूरत है। उन्हें रचनात्मक प्रबोधन की जरूरत है ताकि वे बेहतर, स्वस्थ और सुरक्षित व्यवहार करने के लिए प्रेरित और सशक्त हो सकें।

नलमदना ने कमजोर वर्ग (बच्चे), कम साक्षर लोगों (ग्रामीण और झुग्गी–झोंपड़ी के दर्शक जहाँ आधे से अधिक लोग व्यावहारिक रूप से काम चला सकने जितने भी साक्षर नहीं हैं), और अकसर हाशिए पर रखे जाने वाले लोगों (महिलाएँ) पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इन लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए सम्प्रेषण ऐसा होना चाहिए जो प्रासंगिक हो, उनके जीवन को प्रतिबिम्बित करने वाला हो, भावनात्मक रूप से अच्छा लगने वाला पर हीन दिखाने वाला न हो और मनोरंजक हो।

नलमदना का रणनीतिक सम्प्रेषण कौशल किसी भी स्वास्थ्य या सामाजिक मुद्दे के लिए प्रासंगिक हैं। अब तक जिन विषयों को लिया गया है उनमें एच.आई.वी. और एड्स, परिवार नियोजन, किशोरावस्था, माता और शिशु का स्वास्थ्य, तपेदिक, उच्च रक्तचाप, मधुमेह एवं हृदय रोग, संघर्ष–प्रबन्धन, बाल–उत्पीड़न, लिंग–हिंसा, मद्यपान एवं किशोरावस्था के जीवन कौशल शामिल हैं।

लर्निंग कर्व: *नलमदना* के कामों के बारे में बात करने से पहले हम यह जानना चाहते हैं कि अपने सन्देश को लोगों तक पहुँचाने के लिए नुक्कड़ थियेटर को ही माध्यम के रूप में क्यों चुना गया ?

उत्तरा: चूँकि हम साक्षर और अर्द्ध–साक्षर दोनों समूहों के विविध दर्शकों को सम्बोधित करते हैं इसलिए हमें लगा कि यह माध्यम सबसे अधिक प्रभावकारी रहेगा। इसीलिए हम उनके साथ अन्त:क्रियात्मक सत्रों में भाग ले सके और

प्रतिक्रिया दिखाने के तत्काल अवसर भी मिले ।

लर्निंग कर्व: आप लोग किस तरह के सन्देशों के बारे में बात करना चाहते थे ?

उत्तरा: हम स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों पर बात करने के लिए एक बहाना चाहते थे। हम धार्मिक या वाणिज्य सम्बन्धी मुद्दों के बारे में बात नहीं करना चाहते थे। हम बहुस्तरीय पहुँच के बारे में भी सोच रहे थे। हम समाज के स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों (तथा उनके द्वारा प्रभावित लोगों) और उसके लिए उपलब्ध मदद (जिसके बारे में सबको पता नहीं है) के बीच एक कड़ी चाहते थे। लोगों तक जानकारी पहुँचना एक प्रमुख मुद्दा था। फिर इस मुद्दे के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध महसूस कराने की बात थी और उसके बाद उस पर सोच–विचार कर निर्णय लेने की प्रक्रिया। कभी–कभी हम मुद्दों को समुदाय के सामने लाने और उन पर चर्चा करने के लिए एक आम कहानी और भाषा उपलब्ध कराने वाले वाले पहले व्यक्ति होते थे।

लर्निंग कर्व: क्या आप नुक्कड़ थियेटर को कला का एक रूप कहेंगी? कैसे?

उत्तरा: यह कला का रूप है। प्रभावशाली होने के लिए इसे अच्छे तरीके से करना होता है। इसके अलावा भली प्रकार से सन्तुलित एक कहानी की रचना करना अपने आप में एक कला है क्योंकि उसे उपदेशात्मक या सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं होना चाहिए। मुख्य बात तक पहुँचने के पहले हमारे पास कोई भूमिका होनी चाहिए। भीड़ इकट्ठा करने के लिए समुदाय को लुभाना पड़ता है। रोशनी, संगीत, सेट और रंगमंच सम्बन्धी सामग्री वहाँ होनी चाहिए ताकि लोग हमें गम्भीरता से लें। हमें उस समय टी.वी. पर दिखाए जाने वाले नवीनतम धारावाहिकों के साथ मुकाबला करना होता है।

फिर वेशभूषा के सौंदर्य की भी बात है। हमारे दर्शक इस बात को लेकर बहुत प्रबुद्ध हैं कि वे मनोरंजन के रूप में क्या देखना चाहते हैं क्योंकि टी.वी. के कारण सब कुछ उनकी पहुँच के भीतर आ गया है।

हम सरल भाषा का प्रयोग करते हैं। विश्वसनीय बनने के लिए हम स्थानीय भावाभिव्यक्ति, आम बोलचाल की खिचड़ी भाषा और विशेष लहजे का भी प्रयोग करते हैं पर इस बात का ध्यान रखते हैं कि जानबूझकर अशिष्ट तरीके से न बोलें ! मुख्य बात यह है कि अधिक से अधिक लोगों तक बात पहुँचाई जा सके।

अन्त में, परिणामों पर विचार करने के बाद, अलग प्रकार से व्यवहार करने का इरादा उत्पन्न होना चाहिए।

लर्निंग कर्व: क्या इसमें दर्शकों की भागीदारी होती है?

उत्तरा: बहुत होती है। यदि हमें किसी बात पर चुनौती दी जाती है तो अगले दिन उस पर बातचीत होती है। दर्शकों ने नाटक में जिन पात्रों को देखा, उन पर भी चर्चा होती है।

लर्निंग कर्व: इस तरीके (नुक्कड़ थियेटर) को क्यों चुना गया?

उत्तरा: यह तरीका विचारों को मनोरंजक पटकथा में ढालकर प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त है। मुझे याद है जब हमने अपने पहला नाटक प्रस्तुत किया था तो हमने बहुत कम दर्शकों के आने की उम्मीद की थी, लेकिन एक हजार से अधिक लोग आए!

लर्निंग कर्व: यानी कि इन नाटकों की पटकथा होती है?

उत्तरा: हाँ, थोड़ी बहुत एड–लिबिंग (बिना तैयारी के संवाद बोलना या अभिनय करना) होती है, लेकिन संगीत होता है और एक निश्चित योजना होती है जिसका हम पालन करते हैं।

हम रोल–प्ले का उपयोग करते हैं। विद्यार्थी अभिनय करते हैं और बड़ी मात्रा में अन्त:क्रिया होती है। हम बाल–उत्पीड़न, स्वास्थ्य और स्वच्छता के मुद्दों को लेते हैं। पाँच फ्लिप चार्ट्स होते हैं जिन्हें पुस्तिका या बुकलेट्स में तब्दील कर दिया जाता है। सरोकार इस बात से होता है कि भविष्य, व्यक्तिगत सुरक्षा, स्वच्छता और प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में सोचा जाए। हम एक किट देते हैं जिसमें बुकलेट्स, फ्लिपचार्ट्स और एक डी.वी.डी. होती है। इन्हें चर्चाओं के

रूप में विकसित किया जा सकता है।

लर्निंग कर्व: आप अपनी थीमों को कैसे तय करते हैं ?

उत्तरा: कुछ थीमें तो हमारे स्कूल के कार्यक्रमों में पूछे जाने वाले सवालों से निकलीं हैं। फिर हमारे फोकस समूह की बैठकों में महत्त्वपूर्ण सवाल पूछे जाते हैं। इन बैठकों में हम सिर्फ बच्चों को बुलाते हैं, शिक्षकों को नहीं, ताकि बच्चे यथासम्भव ईमानदारी के साथ अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कर सकें। *नलमदना* जानकारी एकत्र करने के लिए बाहरी स्रोत से विशेषज्ञों की सेवाएँ प्राप्त करता है और इस सामग्री का पूर्व परीक्षण दर्शकों के एक छोटे समूह के साथ किया जाता है।

लर्निंग कर्व: नुक्कड़ थियेटर को शिक्षक स्कूलों में कैसे और कहाँ प्रयोग में ला सकते हैं?

उत्तरा: मुझे लगता है कि जहाँ कहीं भी अलग प्रकार के व्यवहार की आवश्यकता है, वहाँ इसका प्रयोग बहुत सफलतापूर्वक किया जा सकता है। उदाहरण के लिए मूल्यों से सम्बन्धित मुद्दों के लिए इसका प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा सकता है जैसे कि परिवार का सम्मान करना। नैतिक निर्णय भी ऐसा ही एक क्षेत्र है जहाँ इस को काम में लाया जा सकता है – अपने से अलग लोगों के बारे में खुले दिमाग से सोचना एवं सहिष्णुता को प्रोत्साहित करना। यह भी देखने में आया है कि सामान्यतया जानकारी के विश्वसनीय सूत्रों की कमी है और थियेटर इसके लिए नए रास्ते खोल सकता है। इस प्रकार का नाटक अनेक चीजों को बाहर ले आता है जहाँ उन पर चर्चा करना सम्भव होता है। भ्रान्तियाँ मिटाई जा सकती हैं और अहितकारी व्यवहार पर ध्यान दिया जा सकता है। बच्चों से कहानियाँ लिखने, नाटकों की रचना करने और मुद्दों को सामने लाने के लिए कहा जा सकता है। हाँ, लेकिन इन समूहों का ध्यान रखने के लिए एक विशेषज्ञ की जरूरत तो हमेशा पड़ती है। एक बड़ा लाभ यह है कि मुद्दे की भाषा सीख ली जाती है ताकि बातचीत को बढ़ावा मिल सके।

जिस किसी बात को भी सम्बोधित करना है, कहानी उसका प्रारम्भिक बिन्दु हो सकती है। मैं तो यह सुझाव दूँगी कि इनमें से प्रत्येक में केवल दो या तीन बिन्दु हों और कार्यवाही और समझ के लिए एक निश्चित योजना होनी चाहिए। उदाहरण के लिए–अगर आप यह समझ गए हों तो आपको आगे यह करना है। इस प्रकार, बाधाओं और चुनौतियों को सम्बोधित किया जा सकता है। तर्क और उस पर प्रतिक्रिया हमें नए मुद्दों से निपटने के लिए आगे ले जा सकती है।

मैं यह कह सकती हूँ कि स्कूलों में नुक्कड़ थियेटर मॉडल का इस्तेमाल व्यवहार, स्वास्थ्य और नजरिए में परिवर्तन के लिए एक माध्यम के रूप में किया जा सकता है।

यह तथ्यात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है। बेशक, अधिक विचारशील एवं गहरा दृष्टिकोण रातोंरात विकसित नहीं होगा। यह सकारात्मक व्यवहार को गढ़ता है, चीजों को सकारात्मक झुकाव देता है लेकिन उन्हें इतना आसान भी नहीं लगने देता। जब किसी विचार का बीज बोया जाता है और चर्चा शुरू होती है, तभी किसी महत्त्वपूर्ण बदलाव का प्रारम्भ होता है।

__उत्तरा भरत कुमार__ चैन्नई की रहने वाली हैं। उन्होंने मैसाचुसेट्स, यू.एस.ए. में वेलेस्ले कॉलेज से अँग्रेजी और अर्थशास्त्र माइनर में बी.ए. (1993) किया है। बाद में इन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य के जॉन्स हॉपकिंस स्कूल, बाल्टीमोर, यू.एस.ए. से सार्वजनिक स्वास्थ्य विज्ञान MHS (1997) में मास्टर्स किया। अन्तर्राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य में उन्हें 17 वर्षों का अनुभव है और पिछले 12 वर्ष उन्होंने अफ्रीका, भारत और संयुक्त राज्य अमरीका के जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय में काम करते गुजारे हैं। 1993 में उन्होंने चैन्नई में नलमदना (जिसका अर्थ है–आप ठीक हैं ?) नामक एक स्वास्थ्य संचारण गैर सरकारी संगठन की स्थापना की। __अनुवाद:__ नलिनी रावल